ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड VI अंक IX दिसम्बर, 2014

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- ऐग्रो विशन– 2014
- – इस माह की एग्रिप्रेन्यूर – श्रीमती सुमन कुमारी, हरियाणा
- – इस माह का संस्थान – टेर्रा फर्मा बायोटेकनोलॉजिस लिमिटेड, बैंगलुरू कर्नाटक
- – ऐग्रो विशन, 2014 की कुछ झाँकियाँ

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

04 से 07 दिसम्बर, 2014 तक रेशिमबाग मैदान, नागपुर में "ऐग्रो विशन" प्रदर्शनी में केन्द्रीय भारत का सबसे बड़ा कृषि सम्मेलन

"ऐग्रो विषन" का छठवां संस्करण, एक प्रदर्षनी 04 से 07 दिसम्बर, 2014 को रेषिमबाग मैदान, नागपुर, महाराश्ट्र में आयोजित की गई । इस प्रदर्षनी का विशय था " कृशि में नवप्रवर्तन"। श्री नितिन गडकरी, माननीय मंत्री सड़क परिवहन एवं राजमार्ग, नौपरिवहन ग्रामीण विकास, पेयजल और स्वच्छता, पंचायती राज इसके मुख्य दर्षक थे । डॉ. सी.डी.मयी, पूर्व अध्यक्ष, कृशि वैज्ञानिक चयन मंडल, भारतीय कृशि अनुसंधान परिशद प्रदर्षनी आयोजन समिति और श्री रवि बोरतकर, संयुक्त प्रबंध निदेषक, एम.एम.एक्टिव स्की–टेक कम्युनिकेषन प्राइवेट लिमिटेड ने प्रदर्षनी में भाग लिया। कृशि और सहकारिता विभाग, कृशि मंत्रालय (भारत सरकार) महाराश्ट्र बीज, उर्वरक, कृशि उपकरण, सिंचाई उपकरण आदि से संबंधित निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों से 300 से अधिक छोटी बड़ी कंपनियाँ, कृशि संबंधित विभाग, सरकारी संगठन एवं निदेषालय, कृशि विष्वविद्यालय और अनुसंधान संस्थानों ने राश्ट्रीय प्रदर्षनी में भाग लिया । मैनेज, हैदराबाद ने ए सी एंड ए बी सी योजना के तहत चार एग्रिप्रेन्यूरों को प्रदर्षनी में भाग लेने के लिए सहायता प्रदान की । डॉ. सुधीर तुलसीराम धोटे, के.वी.के. बारामती, महाराश्ट्र से प्रषिक्षित एक पषुचिकित्सक श्री युवराज मधुकर राठौड़, के.वी.के. दुर्गापुर महाराश्ट्र से एक कृशि सलाहकार,, डॉ. प्रदीप बुवाजी साल्वे, पषु चिकित्सक, के.वी.के बाभंलेष्वर, महाराश्ट्र और के.वी.ए.ए.एफ, नागपुर से प्रषिक्षित सुश्री कल्पना दिगम्बर दोडरे, बकरी पालन सलाहकार इन एग्रिप्रेन्यूरों ने प्रदर्षनों में भाग लिया ।

श्रीमती हरसिमरत कौर बादल, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री, एग्रिप्रेन्यूरों के साथ बातचीत करते हुए

पृश्ठ सं. 4 में जारी .....

मषरूम की खेती . सुश्री सुमन कुमारी,

सुश्री सुमन कुमारी, (32), खूबरू तालुका, गानौर, जिला सोनीपत, हरियाणा का कहना है कि, ''फूड इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर के तुरंत बाद मेरी शादी हो गई और मैं अपने ससुराल वालों के साथ रह रही थी। मेरे ससुर मशरूम उत्पादन की छोटी सी इकाई चला रहे थे । उनके उद्योग से प्रेरित होकर, मेरी भी दिलचस्पी इस कार्य में बढ़ी । मैंने यह निर्णय लिया कि नौकरी करने के बजाय, मैं मशरूम उत्पादन में अपना कैरियर शुरू करूं तथा नई तकनीकों के कार्यान्वयन से अपने व्यवसाय का विस्तार करूं ।

सुश्री सुमन कुमारी कम लागत की मशरूम प्रसंस्करण यूनिट के साथ

एक दिन इंटरनेट देखते–देखते श्रीमती सुमन को ए सी और ए बी सी योजना के विषय में पता चला। उन्होंने नोडल संस्थानों की खोज की और पाया कि उनके ही राज्य में इंडियन सोसायटी ऑफ एग्री बिजनेस प्रोफेशनल्स, करनाल, हरियाणा एक नोडल संस्थान है, जो ए सी और ए बी सी कार्यक्रम आयोजित करता है। उन्होंने आवेदन किया और वर्ष 2010 में प्रशिक्षण हेतु चयनित हो गई । उनके अनुसार, प्रशिक्षण कार्यक्रम अभ्यासिक अभिविन्यस्त था और उन्हें सफल एग्रिप्रेन्यूरों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण सामग्री अच्छी थी और इसमें एग्री व्यवसायी विकास के हर पहलू को शामिल किया गया था। बाजार के सर्वेक्षण के दौरान, उन्होंने कई प्रत्याशित ग्राहकों से बटन मशरूम की उनकी आवश्यकताओं को जानने के लिए उनसे आग्रह किया। उन्होंने यह पाया कि मशरूम व्यवसाय एक बढ़ता व्यवसाय है और पिछले कुछ वर्षों में इसकी मांग में वृद्धि हुई है। उन्होंने यह भी पाया कि जो लोग इस व्यवसाय में लंबे समय से बने हुए है उनका तकनीकी ज्ञान बहुत कम है। अतः उन्होंने इस व्यवसाय में उनके ज्ञान के साथ प्रवेश करने का निश्चय किया। प्रशिक्षण के पश्चात उन्होंने सुमी एग्रो फॉर्म प्रॉडक्ट्स के नाम से अपना फर्म पंजीकृत करवाया। उन्होंने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, हुडा शाखा, सोनीपत के सम क्ष डीपीआर प्रस्तुत किया जिन्होंने रू. 14.5 लाख का मियादी ऋण स्वीकृत किया और नाबार्ड ने 44 प्रतिशत सब्सिडी प्रदान की। उन्होंने मशरूम हाउस (छप्पर के साथ मिट्टी का घर) बनाने की आसान और सस्ती तकनीक को अपनाकर सफेद बटन मशरूम की खेती में सुधार लाया।

श्रीमती सुमन कुमारी का कहना है कि, ''एक प्रौद्योगिकीविद होने के कारण, मैं यह फर्क कर सकती हूँ कि मशरूम की खेती अभ्यास और तकनीकी ज्ञान का विषय है न की श्रम आधारित खेती और इसमें कम समय में उच्च मूल्य का प्रतिफलभी प्राप्त होता है। मशरूम के खेत में स्वच्छता आवश्यक है। मैं स्वतः मशरूम की खेती के सभी चरणों जैसे स्वॉन उत्पादन, खाद की तैयारी, स्पॉनींग, केसिंग और प्रुटिंग का ध्यान रखती हूँ।'' उन्होंने अपने फर्म का व्यावसायिक वेब पेज विकसित किया है और पूरे भारत में ऑनलाइन मशरूम की ब्रिकी आरंभ की है। साथ ही उन्होंने अप. ना ध्यान आस–पास के नगरों/उप–नगरों के बाजार पर भी केन्द्रित किया है और निर्यात की भी योजना बना रही है। इसके अलावा, वह ताजे मशरूम स्पॉन, खाद और अन्य निवेश जो मशरूम के उत्पादन में आवश्यक है उनकी भी ऑनलाइन आपूर्ति कर रही है। गैर–मौसम में उन्होंने मशरूम की खेती पर प्रशिक्षण भी प्रदान किया और 10 गांवों से लगभग 50 व्यक्तियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

मौसम के दौरान उन्होंने 45 टन मशरूम की फसल उगाई और 500 ग्राहकों को इसकी बिक्री की। सुमी एग्रो फार्म का रू. 15 लाख के मुनाफे के साथ वार्षिक कारोबार रू. 30 लाख है। उनकी आय उनके ससुर की आय से तीन गुना ज्यादा बढ़ गई है। उन्होंने 10 लोगों के लिए रोजगार उत्पन्न किए है। वह मशरूम की नियंत्रित खेती और साथ ही प्रक्रमण एकक की योजना बना रही है ताकि वर्षभर मशरूम की खेती और ब्रिकी की जा सके। वे अपना मशरूम अचार ब्रैण्ड शुरू करना चाहती है। श्रीमती सुमन कुमारी की कृषि व्यवसायियों से अपील है कि ''कृषि क्षेत्र में नौकरी से भी अधिक कमाने के अवसर है। उन्हें अपनाकर खोजें ।

श्रीमती सुमन कुमारी धनकर, पत्नी श्री अशोक धनकर
वी.पी.ओ. खुबरू, तहसील–गनौर, जिला सोनीपत, हरियाणा, भारत, E-mail - leon981011@gmail.com, Mobile - + 91 8295344660

टेर्रा फर्मा बायोटेक्नोलॉजीस लिमिटेड, बैंगलुरू, कर्नाटक के द्वारा आई सी टी की प्रबंधकीय सहायता से एग्रिप्रेन्यूरों में उद्यमशीलता में सुधार लाना।

डॉ. आर. गणेश एवं सहयोगियों द्वारा प्रचारित टेर्रा फर्मा बायोटेक्नोलॉजिस लिमिटेड, बैंगलुरू पहला निजी संस्थान है, जिसे मैनेज ने बैंगलुरू, कर्नाटक में ए सी और ए बी सी प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए चुना है। टेर्रा –फर्मा बायोटेक्नोलॉजिस लिमिटेड के नाम पर कृषि स्नातकों और तकनी. कतंत्रियों का एक समूह पूरी तरह पर्यावर्णीय पहलुओं पर कार्य कर रहा था। वर्ष 1994 से यह कम्पनी रसायनिक ऊर्वरकों को बदलने और जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए ''ठोस अव्यय पुनर्चक्रण'' में मुख्य भूमिका निभा रही है। जैविक कृषि के लिए जैव प्रौद्योगिकीविद द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों को शहरी अव्ययों का निपटान करने के लिए उपयुक्त ढंग से बदला गया और वर्धित सूक्ष्म जीव एवं केंचुआ पालन पद्धति को अपनाकर ठोस अव्ययों को मूल्य वर्धित एवं उत्कृष्ट पदार्थों में बदला गया। संस्थान ने ठोस अव्ययों को संभालने और इनका प्रबंध करने में गहरा ज्ञान प्राप्त किया है। इस अनूठी अवधारणा के अधिकृत, कर्नाटक सरकार ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के द्वारा वर्ष 1995–96 में प्रबंध निदेशक को सर्वश्रेष्ठ पर्यावरणविद अवॉर्ड प्रदान किया।

ए सी और ए बी सी योजना से संबंध –

वर्ष 2002 से टेर्रा फर्मा बायोटेक्नोलॉजिस लिमिटेड, बैंगलुरू, कर्नाटक, ए सी और ए बी सी योजना को कार्यान्वित करने हेतु मैनेज से जुड़ा हुआ है। अब तक इस योजना के अंतर्गत 55 बैचो को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। कुल 1837 अभ्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया था और 771 एग्रिप्रेन्यूरों ने विभिन्न क्षेत्रों जैसे – एग्री क्लिनिक, एग्री–व्यवसाय केन्द्र, नर्सरी, पॉलट्री, पशुचिकित्सालय, कस्टम हाइरिंग केन्द्र, डेयरी, भेड़/बकरी एकक, बीज उत्पादन में संविदा कृषि, सूक्ष्म पोषक तत्वों, जैव–ऊर्वरक, जैव कीटनाशक आदि के उत्पादन एकक आदि क्षेत्रों में सफलतापूर्वक एग्रिवेंचर स्थापित किए है। इसकी सफलता का दर 41.73 प्रतिशत है।

ए सी और ए बी सी योजना के प्रचार के लिए संस्थान की उत्तम पद्धतियां

- कृषि व्यवसायियों में ए सी और ए बी सी योजना पर जागरूकता अभियान आयोजित करना। स्थानीय समाचार पत्रों के द्वारा ए सी और ए बी सी योजना के विषय में अधिवेशन पूर्व विज्ञापन देना।
- बैंकरों के पास लंबित प्रस्तावों की समीक्षा कर ए सी और ए बी सी योजना के कार्यान्वयन को दृढ़ बनाने के लिए नाबार्ड और अन्य साझेदारों के समन्वय से बैंकरों के लिए वार्षिक कार्यशालाएं आयोजित करना।
- एग्रिप्रेन्यूरों को व्यवसाय लाइसेंस प्राप्त करने और नये वैंचर की स्थापना में प्रक्रियागत औपचारिकताओं को पूरा करने हेतु नियमित रूप से सहायता प्रदान करना।
- प्रशिक्षुओं में कम्प्यूटर कौशल को अधिक मजबूत करने हेतु सूचना प्रौद्योगिकी पर पूर्व सत्र उन्मुखीकरण कक्षाएं आयोजित करना।
- संस्थान के कृषि–सूचना प्रभाग द्वारा प्रशिक्षुओं को ई–साहित्य प्रदान करवाना।
- एग्रिप्रेन्यूरों में कृषि उद्यमिता कौशल को बढ़ाने हेतु पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- कृषि–उद्योगों में प्रशिक्षुओं के ज्ञान को मजबूत करने के लिए एग्रो आधारित संस्थानों से विशेषज्ञों को लेने के अलावा संस्थान के पैनल में प्रबंधकीय विशेषज्ञों को शामिल करना।

ए सी और ए बी सी योजना की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ – वर्ष 2002 से कुल 1837 अभ्यार्थियों को प्रशिक्षित किया गया था तथा कर्नाटक के विभिन्न क्षेत्रों मे 771 एग्रिवेंचर्स सफलतापूर्वक स्थापित किए गए है और 41.73 प्रतिशत संचयी सफलता दर प्राप्त की गई है। एक सफल एग्रिप्रेन्यूर दम्पति श्री थीम्मन्ना हेगडे और श्रीमती बी.एम. विजया ने यलीथ ग्राम, तालुका ब्यंदूर, उडुपी जिले में हेगडे फार्म एवं नर्सरी, विजया डेयरी की स्थापना की है और आस–पास के गांवों के लिए कृषि परामर्श कार्य आरंभ किया है। इस दम्पति को वर्ष 2013 के दौरान कर्नाटक सरकार एवं बैंगलुरू कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति द्वारा ''कृषि रत्न अवॉर्ड'' से सम्मानित किया गया ।

के.जी. ननजुंडप्पा
नोडल अधिकारी

टेर्रा फर्मा बायोटेक्नोलॉजी लिमिटेड बैंगलुरू, कर्नाटक
104, रन्का पार्क, सं. 5, लालबाग रोड, बैंगलुरू –27 E-ID: info@terrafirmabiotech.com Mobile 9902775318

पृष्ठ संख्या 1 से .....

- डॉ. सुधीर तुलसीराम धोटे ने 04 दिसम्बर, 2014 को दुधारू पशुओं के आहार एवं चारा प्रबंधन, समय–समय पर टीकाकरण और कृमिनाशन के महत्व को चिन्हांकित किया । उन्होंने दूध के उत्पादन को बढ़ाने के लिए गुणवत्ता की नस्ल के वीर्य के चयन पर जोर दिया । 4500 से अधिक कृषकों ने उनके स्टॉल का दौरा किया ।
- 5 दिसम्बर, 2014 को श्री युवराज मधुकर राठौड़, के.वी.के., दुर्गापुर से एक कृषि सलाहकार ने मुख्यतः विदर्भा क्षेत्र के लिए नकदी फसलों जैसे–कपास, केला और हल्दी की पद्धतियों के पैकेजों के बारे में समझाया। उन्होंने ज्वार, बाजरा जैसे अनाजों के उत्पादन के लिए भी किसानों को प्रोत्साहित किया। 10000 से अधिक किसानों ने उनके स्टॉल का दौरा किया।

युगांडा कृषि मंत्रालय से आगंतुक एग्री उत्पादों को देखते हुए

माननीय मंत्री श्री नितिन गडकरी, स्टॉल का दौरा करते हुए

- 6 दिसम्बर, 2014 को डॉ. प्रदीप बुवाजी साल्वे, के.वी.के. बांभलेश्वर से एक पशु चिकित्सक ने पशु स्वास्थ्य प्रबंधन एवं बछड़ा पालन के महत्व को चिन्हांकित किया । उन्होंने कृषकों को छोटे स्तर पर डेयरी, पॉलट्री/मुर्गीपालन, बकरीपालन एकक स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित किया। 20,000 से अधिक किसानों ने उनके स्टॉल का दौरा किया ।

डॉ. सी.डी मयी, पूर्व अध्यक्ष, प्रशंसा प्रमाण पत्र एवं टॉफी प्रस्तुत करते हुए

डॉ. प्रशान्त अर्मोरिकर, निदेशक एमओए, एसी और एबीसी योजना के बारे में समझाते हुए

- सुश्री कल्पना दिगंबर दोडरे, के वी ए ए एफ, नागपुर द्वारा प्रशिक्षित बकरी पालन सलाहकार ने 7 दिसम्बर, 2014 को भूमिहीन किसानों को बकरी पालन के महत्व और बकरी पालन के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं की उपलब्धता के विषय में समझाया । लगभग 25000 किसानों ने उनके स्टॉल का दौरा किया और बकरी पालन में ज्ञान अर्जित किया ।

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

एग्री क्लीनिकों तथा एग्रीबिजनेस केंद्रों के संबंध में अधिक स्पष्टीकरण के लिए कृपया इस पते पर मेल करें। indianagripreneur@manage.gov.in

''प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि''

"कृषिउद्यमी" श्री बी श्रीनिवास, आईएएस, महानिदेशक, द्वारा प्रकाशित

हमसे संपर्क करें:

कृषि उद्यमिता विकास केन्द्र, (सीएडी)

कृषि विस्तार प्रबंधन के राष्ट्रीय संस्थान

(मैनेज), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद,पिन-500 030, भारत

ई मेल: indianagripreneur@manage.gov.in

वेबसाइट: www.agriclinics.net

हेल्पलाइन नं. : 1800 425 1556 (टोल फ्री)

ईमेल helplinecad@manage.gov.in

प्रमुख संपादक : श्री वी. श्रीनिवास, आईएएस

संपादक : डा. पी. चंद्रशेखर

सहायक संपादक : डा. लक्ष्मीमूर्ति

: सुश्री ज्योति सहारे